49

गलत इरादे

(20:1-34)

इस अध्याय में पिरिया और यहूदिया में यीशु की सेवकाई का विवरण जारी रहता है, जिसका अध्याय 19 में हुआ था। इसमें दाख की बारी वाले किसानों का दृष्टांत (20:1-16), यीशु की निकट मृत्यु की तीसरी घोषणा (20:17-19), राज्य में बड़ा बनने पर निर्देश (20:20-28) और यरीहो में दो अंधों को यीशु द्वारा चंगा किया जाना शामिल है (20:29-34)।

दाख की बारी में मज़दूरों का दृष्टांत (20:1-16)

1''स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्वामी के समान है, जो सवेरे निकला कि अपने दाख
की बारी में मज़दूरों को लाएगा। 2उसने मज़दूरों में एक दीनार रोज पर ठहराकर और उन्हें
अपने दाख की बारी में भेजा। 3फिर पहर एक दिन चढ़े उसने निकलकर अन्य लोगों को
बाज़ार में बेकार खड़े देखकर, 4और उनसे कहा, 'तुम भी दाख की बारी में जाओ, और
जो कुछ ठीक है, तुम्हें दूंगा।' अतः वे भी गए। 5फिर उस ने दूसरे और तीसरे पहर के निकट
निकलकर वैसा ही किया। 6एक घंटा दिन रहे उसने फिर निकलकर दूसरों को खड़े पाया,
और उन से कहा, 'तुम क्यों यहां दिनभर बेकार खड़े रहे?' उन्होंने उस से कहा, 'इसलिए
कि किसी ने हमें मज़दूरी पर नहीं लगाया।' 7उसने उनसे कहा, 'तुम भी दाख की बारी में
जाओ।' ''

8''सांझ को दाख की बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी से कहा, 'मज़दूरों को बुलाकर
पिछलों से लेकर पहिलों तक उन्हें मज़दूरी दे दे।' 9जब वे आए, जो घंटा भर दिन रहे
लगाए गए थे, तो उन्हें एक दीनार मिला। 10जो पहिले आए, उन्होंने यह समझा कि हमें
अधिक मिलेगा, परन्तु उन्हें भी एक एक दीनार ही मिला। 11जब मिला तो वे गृहस्वामी पर
कुड़कुड़ा के कहने लगे, 12'इन पिछलों ने एक ही घंटा काम किया, और तू ने उन्हें हमारे
बराबर कर दिया, जिन्होंने दिनभर का भार उठाया और धूप सही?' 13उसने उनमें से एक
की उत्तर दिया, 'हे मित्र, मैं तुझ से कुछ अन्याय नहीं करता; क्या तू ने मुझ से एक दीनार
न ठहराया? 14जो तेरा है, उठा ले, और चला जा; मेरी इच्छा यह है कि जितना तुझे दूं उतना
ही इस पिछले को भी दूं। 15क्या यह उचित नहीं कि मैं अपने माल से जो चाहूं सो करूं?
क्या तू मेरे भले होने का कारण बुरी दृष्टि से देखता है?' 16इसी रीति से जो पिछले हैं, वे
पहिले होंगे; और जो पहिले हैं, वे पिछले होंगे।''

जहां तक यीशु के इस दृष्टांत को बताने की पृष्ठभूमि की बात है, पतरस ने प्रभु से अभी-

अभी पूछा था कि अपने बलिदान और सेवा के बदले में प्रेरित क्या उम्मीद रखें (19:27)। यीशु ने पतरस को वचन दिया कि विशेषकर उन्हें एक बड़ा प्रतिफल मिलेगा; वे इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करने के लिए बारह सिंहासनों पर बैठेंगे (19:28)। उसने आगे कहा, किसी के लिए भी जिसने उसके नाम और सुसमाचार के लिए बलिदान किए हों बड़े प्रतिफल मिलने थे (19:29)। अन्त की बात के रूप में उसने घोषणा की, "परन्तु बहुत से जो पहले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, पहिले होंगे" (19:30)।

फिर यीशु ने इस सच्चाई को एक अलग रोशनी में समझाने के लिए दाख की बारी में काम करने वालों का दृष्टांत दिया (20:1-16)। उसका उद्देश्य अपने प्रेरितों को सेवा के लिए गलत इरादों के विरुद्ध सावधान करना था। परमेश्वर की सेवा कभी भी इनाम पाने की उम्मीद से नहीं करनी चाहिए। उद्धार का मिलना अनुग्रह से होता है, क्योंकि इसे शुभ कर्मों के द्वारा कमाया नहीं जा सकता (इफिसियों 2:8-10)। न ही दूसरों के साथ अपने आपको मिलाना चाहिए या परमेश्वर की ओर से उन्हें मिली आशिषों पर जलना चाहिए।

आयत 1. स्वर्ग का राज्य ... के समान है वाक्यांश या ऐसी शब्दावली का इस्तेमाल यीशु द्वारा आम तौर पर ऐसे दृष्टांतों में किया जाता था जिनमें राज्य की तुलना अन्य बातों से की जा रही है (13:24, 31, 33, 44, 45, 47; 18:23; 22:2; 25:1)। इस संदर्भ में स्वर्ग के राज्य की तुलना दाख की बारी के स्वामी से नहीं बल्कि स्वामी के मज़दूरों को भाड़े पर लगाने की परिस्थिति से है। बेशक स्वामी की कृपा और भलाई सिखाए जाने वाले इस सबक का आवश्यक भाग है।

"स्वर्ग का राज्य," "परमेश्वर का राज्य," "मेरा राज्य," और "राज्य" चाहे सभी एक ही संस्थान की बात करते हैं, परन्तु प्रत्येक वाक्यांश के संदर्भ को ध्यान में रखा जाना आवश्यक है। ये शब्द किसी आने वाले, अनन्त की बात नहीं बल्कि परमेश्वर के शासन की बात करते हैं जो अब भी है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला यह प्रचार करते हुए आया, "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है" (3:2)। यीशु बताता था, "समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो" (मरकुस 1:15)। वे उसी राज्य का प्रचार कर रहे थे और कहते थे कि वह निकट आ रहा है। यीशु ने प्रेरितों से प्रतिज्ञा की कि वे राज्य को सामर्थ के साथ आते देखेंगे (मरकुस 9:1)। अपने ऊपर उठाए जाने से पहले उसने इन्हीं ग्यारह लोगों को "पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट" जोहने के लिए यरूशलेम में रुकने को कहा था (प्रेरितों 1:4) क्योंकि यहूदा उनके साथ नहीं रहा था। यह पवित्र आत्मा का बपतिस्मा ही था जिसके आने पर उन्हें "सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर" (प्रेरितों 1:8) मसीह की गवाही देने के लिए सामर्थ मिलनी थी। यह प्रतिज्ञा पिन्तेकुस्त के दिन पूरी हो गई थी (प्रेरितों 2)। उस दिन पवित्र आत्मा उतरा, प्रेरितों को आश्चर्यकर्म करने की शक्ति मिली और परमेश्वर/स्वर्ग का राज्य स्थापित हो गया (प्रेरितों 2:29-41; 1 कुरिन्थियों 15:20-28; कुलुस्सियों 1:13; इब्रानियों 12:28)।

गृहस्वामी (*oikodespotēs*) एक मिश्रित शब्द का अनुवाद है, जिसका अक्षरश: अर्थ है "घर का स्वामी।" दृष्टांतों में आम तौर पर इसका अर्थ यीशु या परमेश्वर होता है (10:25; 13:27; 20:1; 21:33; लूका 13:25; 14:21)। ये शब्द धनवान और अधिकार वाले व्यक्ति का सुझाव देता है। इस दृष्टांत में "गृहस्वामी" का एक "भण्डारी" था जो मज़दूरों के ऊपर था

(20:8), परन्तु वह भी व्यक्तिगत रूप से मज़दूरों को भाड़े पर लगा सकता था।

दाख की बारियां फलस्तीन में आम तौर पर देखी जा सकती थीं जो इसके पहाड़ी इलाकों पर होती थीं। पुराने नियम में प्रतिज्ञा किए हुए देश में सफलता किसी के अंजीर और जैतून के पेड़ों और दाख की बारी होने से नापी जाती थी (व्यवस्थाविवरण 6:11; यहोशू 24:13; 1 राजाओं 4:25; 2 राजाओं 18:31; योएल 1:12; 2:22)। इसके अलावा इस्राएल को कई बार परमेश्वर की दाखलता या दाख की बारी के रूप में दिखाया जाता था (यशायाह 5:1-7; यिर्मयाह 2:21; 12:10; होशे 10:1)। नये नियम में दाख की बारियां यीशु के दृष्टांतों की जानी पहचानी पृष्ठभूमि का काम करती हैं (20:1; 21:28, 33; लूका 13:6)। दाखलता या दाख की बारी का इस्तेमाल मसीह की कलीसिया का संकेत देने के लिए भी किया गया है (यूहन्ना 15:1-11; 1 कुरिन्थियों 9:7)।

गृहस्वामी **सवेरे निकला कि अपने दाख की बारी में मज़दूरों को** काम पर लगाए। बाजार आम तौर पर मज़दूरों के इकट्ठा होने का स्थान होता था (20:3)। ये कर्मचारी जो आम तौर पर अशिक्षित और अकुशल होते थे सामाजिक, आर्थिक विकास के बहुत पीछे होते थे। उन्हें आम तौर पर कम मज़दूरी पर लगाया जाता और उनसे दुर्व्यवहार किया जाता था (मलाकी 3:5; याकूब 5:4)। परमेश्वर ने विशेष आज्ञाएं दे रखी थीं जो उनके साथ उचित व्यवहार की गारंटी के लिए थीं (लैव्यव्यवस्था 19:13; व्यवस्थाविवरण 24:14, 15)।

दिन को तीन-तीन घंटे के चार पहरों में बांटा जाता था। इसका आरम्भ प्रात: 6:00 बजे या सूर्योदय से होता और यह शाम 6:00 बजे के लगभग सूर्यास्त के साथ बारह घंटे तक रहता (भजन संहिता 104:20-23; यूहन्ना 11:9)। टालमुड में कहा गया है कि कर्मचारी काम देने वाले के समय पर खेत में जाए परन्तु अपने समय पर घर लौटे।[1] इस दृष्टांत में काम का समय मज़दूरों को बाजार में भाड़े पर लाने से आरम्भ हुआ और खत्म सूर्यास्त के साथ खत्म हुआ।[2]

फलस्तीन में अंगूरों की कटाई आम तौर पर अगस्त और सितम्बर में होती थी, जब मौसम अभी थोड़ा गर्म होता था (20:12)। गृहस्वामी इस दिन कर्मचारियों को काम पर लगाने के लिए पांच बार बाजार गया (20:1, 3, 5, 6)। वह बरसात के आरम्भ होने से पहल-पहले अपने अंगूरों की कटाई कर लेने की जल्दी में हो सकता है। पहली बारिश सितम्बर के अन्तिम भाग में होती थी जिससे गर्मियों के लम्बे सूखे का अन्त हो जाता था।

आयत 2. पहले **मज़दूरों** के साथ गृहस्वामी का समझौता **एक दीनार रोज** का था। दीनार जो चांदी का एक रोमी सिक्का होता था, दिन भर के काम के लिए आम तौर पर वेतन के लिए दिया जाता था।[3] इसे रोमी सिपाही को भी दिया जाता था।[4] उनके समझौता कर लेने के बाद गृहस्वामी ने **अपने दाख की बारी** में काम करने के लिए और मज़दूरों को **भेजा**।

आयत 3. गृहस्वामी **बाजार में** लगभग **पहर चढ़े** (लगभग प्रात: 9:00 बजे) लौटा और आकर उसने **अन्य लोगों को बेकार खड़े** देखा, जो किसी दूसरे की राह देख रहे कि कोई उन्हें काम पर लगाए। प्राचीन जगत में लोगों को आम तौर पर एक समय में काम करने के लिए रखा जाता था जिससे उन्हें हर रोज दिन के अन्त में अपनी मज़दूरी मिल जाती थी। यह कमाई उनकी उस दिन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए काफी होती (6:11)। यदि उन्हें काम न मिलता तो उन्हें अपना प्रतिदिन का प्राप्त भोजन न मिल पाता; सो दृष्टांत में बताए गए कर्मचारियों

जैसे लोग इस उम्मीद से कि कोई उन्हें काम पर लगाने के लिए आएगा, बाजार में खड़े रहते थे।[5]

आयत 4. गृहस्वामी ने उम्मीद से भरे इन लोगों से कहा, **''तुम भी दाख की बारी में जाओ, और जो कुछ ठीक है, तुम्हें दूंगा।''** यूनानी भाषा में ''तुम भी'' पर ज़ोर दिया गया है। वह उन्हें उनके साथ मिल जाने को कह रहा था, जिन्होंने तीन घण्टे पहले काम आरम्भ किया था। ''जो कुछ ठीक है, तुम्हें दूंगा'' (NASB) के स्थान पर कई संस्करणों में ''मैं तुम्हें सही मज़दूरी दूंगा'' (TEV; NEB; REB)। कर्मचारी मान गए कि उन्हें जो भी मिलेगा वह ले लेंगे और स्पष्टतया उन्होंने दाख की बारी के स्वामी पर न्यायप्रिय निष्पक्ष होने का भरोसा किया। लियोन मौरिस को लगा कि यह कर्मचारी देरी से आए थे इसलिए वे सारे दिन की मज़दूरी का दावा नहीं कर सकते थे। उन्होंने भी यही समझा कि इस आदमी के कहने का अर्थ है कि वह उन्हें दीनार का सही-सही भाग दे देगा।[6]

आयत 5. गृहस्वामी **दूसरे और तीसरे पहर** (12:00 बजे दोपहर और 3:00 बजे शाम) **के निकट निकलकर** गया और उसने पहले पहर पर लगाए गए मज़दूरों की तरह **वाले** समझौते से ही और मज़दूर लगा लिए।

आयत 6. एक घण्टा दिन (5:00 बजे शाम) रहने पर अर्थात समय खत्म होने से एक घण्टा पहले उस आदमी ने बाजार जाकर वहां कुछ रह गए बेकार मज़दूरों को भी काम पर लगा दिया। उसने उनसे पूछा, **''तुम क्यों दिन भर यहां बेकार खड़े रहे?''** इस प्रश्न को उनकी स्पष्ट सुस्ती के लिए डांट या अपने बेकार होने के सम्बन्ध में व्याख्या के रूप में समझा जा सकता है।

आयत 7. उन्होंने उत्तर दिया कि **किसी ने** उन्हें **मज़दूरी पर** नहीं लगाया [था]। वचन उनके काम पर न लगने की और व्याख्या नहीं देता। स्वामी ने उनसे कहा, **''तुम भी दाख की बारी में जाओ।''** आयत 4 की तरह जोर ''तुम भी ...'' पर है। वह उन्हें उनके साथ मिलाना चाहता था जिन्हें उसने पूरा दिन मज़दूरी पर लगाया था। इस अवसर पर पैसे की किसी बात का कोई जिक्र नहीं है। बहुत सम्भावना है कि इन मज़दूरों ने यह मानते हुए कि उन्हें उचित वेतन दिया जाएगा काम करने पर लग गए। उन्हें केवल अन्य मज़दूरों से ठहराए गए वेतन का कुछ भाग मिलने की उम्मीद होगी, चाहे उन्हें अपने परिवार चलाने के लिए उससे कहीं अधिक की आवश्यकता थी।

आयत 8. बारह घण्टे का दिन जब खत्म हुआ, **दाख की बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी** को आज्ञा दी, **''मज़दूरों को बुलाकर पिछलों से लेकर पहिलों तक उन्हें मज़दूरी दे दे।''** आम तौर पर मज़दूरों को दिन के अन्त में मज़दूरी दे देने का रिवाज़ था ताकि वे भूखे न सोएं (लैव्यव्यवस्था 19:13; व्यवस्थाविवरण 24:14, 15; देखें मत्ती 6:11)। किसी को लगेगा कि पहले लगाए गए मज़दूरों को पहले मज़दूरी दी गई होगी। इसका उलटा क्रम दृष्टांत के शेष भाग की बातचीत का आधार देता है। इस क्रम से विचाराधीन नियम की समझ आती है कि ''जो पिछले हैं वे पहले होंगे; पहले हैं वे पिछले होंगे'' (20:16; देखें 19:30)। पहले और अन्तिम समूहों का विशेष रूप से उल्लेख है पर यह साफ है कि सभी पांचों दलों को मज़दूरी दी गई।

आयत 9. जो घण्टा भर दिन लगाए गए थे उन्हें **एक एक दीनार मिला।** उन्होंने बारह में से केवल एक घण्टा काम किया था परन्तु मज़दूरी पूरे दिन की मिल गई। ये कर्मचारी बेशक गृहस्वामी के करुणा भरे कार्य के लिए उसके आभारी थे। जिन्हें पहले काम पर लगाया गया था

वे अन्त में काम पर लगाए हुओं को मिलने वाली मज़दूरी देख रहे थे।

आयत 10. जो पहले आए वे सुबह हुए समझौते के अधीन दीनार से **अधिक** मिलने की उम्मीद से भण्डारी के पास गए (20:2)। वे निराश हो गए कि **उन्हें भी एक एक दीनार ही मिला**। यूनानी भाषा में ज़ोर इस तथ्य पर दिया गया है कि "उन्हें भी" वही मिला जो काम पर लगाए दूसरे लोगों को दिया गया था।

आयत 11. मज़दूरी चाहे भण्डारी ने दी पर इस घटना को देखने के लिए **गृहस्वामी** पास ही खड़ा था। उसने चाहे अपने समझौते को पूरा किया था पर पहले लगाए गए मज़दूर अपनी मज़दूरी पर **कुड़कुड़ाने** लगे। यहां पर यूनानी भाषा का शब्द (*gonguzō* से) "अनुकरणात्मक" ऐसा शब्द है जिसे उसी की नकल करते हुए उच्चारण किया जाता है। अंग्रेजी भाषा में हम कह सकते हैं "mutter" (बड़बड़ाना), "mumble," (बुदबुदाना) या "murmur" (फुसफुसाना)।[7] यह थोड़ा हैरान करने वाला है कि मज़दूर उस गृहस्वामी के विरुद्ध कुड़कुड़ा रहे थे, जिस पर उन्हें उम्मीद थी कि वह उन्हें और काम देगा।

आयत 12. ये मज़दूरी जिन्होंने **दिनभर का भार उठाया और धूप सही** थी, वे गृहस्वामी के विरुद्ध कुड़कुड़ा रहे थे, क्योंकि उसने उन्हें उनके **बराबर कर दिया** था जिन्होंने **एक ही घण्टा काम किया** था। 6:00 बजे प्रात: आने वालों ने अपने काम देने वाले पर दो गलतियां करने का आरोप लगाया। पहले तो उन्होंने कहा कि उसने अन्याय किया है, क्योंकि उसने काम के बारह घण्टों और काम के एक घण्टे में अन्तर नहीं किया। दूसरा, उन्होंने उस पर विचार न करने का आरोप लगाया, क्योंकि उसने दोपहर की गर्मी और शाम की ठण्डक के बीच के अन्तर को नहीं माना था।[8] "धूप सही" (*kausōn*) का अर्थ सूर्य की कड़ी धूप हो सकता है। परन्तु इसका अर्थ झुलसती पूर्वी हवा भी हो सकता है जिसे "लू" भी कहा जाता है। झुलसती गर्मी "कई बार मज़दूरों को खेतों से भगा देती थी।"[9]

आयतें 13-15. मज़दूरों ने गृहस्वामी के साथ बिना कोई आदर दिखाए बात की (20:12)। इसके विपरीत जब **उसने उनमें से एक** से बात की तो उसने उसे **हे मित्र** (*hetairos*) कहकर बुलाया। ये शब्द कई बार "किसी ऐसे व्यक्ति के लिए जिसका नाम पता न हो" बात करने के "एक सामान्य रूप" में माने जाते हैं।[10] हंसी की बात है कि इसका इस्तेमाल डांट के रूप में किया जा सकता है (22:12; 26:50) जैसा कि यहां लगता है। इस शब्द को (*philos*) से अलग किया जाना चाहिए क्योंकि भाड़े पर लगाए गए मज़दूर को समान अर्थ में "मित्र" के रूप में नहीं देखा जाना था। काम करने के स्थान के कायदों के अनुसार निर्धन लोगों को ऐसी हमदर्दी की उम्मीद नहीं होती थी, जैसी इस गृहस्वामी ने दिखाई। गरीब आदमी अपने दिए गए काम के वेतन को अनुग्रह ही मानता।[11]

गृहस्वामी ने कहा, **"हे मित्र, मैं तुझ से कुछ अन्याय नहीं करता; क्या तू ने मुझ से एक दीनार न ठहराया?"** उसने उन्हें उनका मूल समझौता याद दिलाया। उसने उनके साथ कोई छल नहीं किया था, क्योंकि जो उन्हें दिया गया था काम करने के समय उन्होंने ने ही उसे ठहराया था।

आदमी ने आगे कहा, **"जो तेरा है, उठा ले।"** इन लोगों के साथ कोई अन्याय नहीं हुआ था इस कारण उन्हें बनता वेतन ले लेने पर संतुष्ट हो जाना चाहिए था। उन सब ने जो एक एक दीनार कमाया था उनके परिवार के भोजन के लिए प्रयाप्त होना था।

गृहस्वामी ने यह भी कहा, **''मेरी इच्छा यह है कि जितना तुझे दूं उतना ही इस पिछले को भी दूं।''** बेशक उसके मन में अन्त में ठहराए गए मज़दूरों के प्रति दया की भावना थी। यदि वह उन्हें केवल एक घण्टे की मज़दूरी देता तो उन लोगों के पास अपने परिवारों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए काफी नहीं होना था।

पहले आए मज़दूरों को उनकी जगह पर रखते हुए गृहस्वामी ने यह सीधा सा प्रश्न पूछ लिया: **''क्या यह उचित नहीं कि मैं अपने माल से जो चाहूं सो करूं?''** उस पर गलत होने का आरोप क्यों लग रहा था, जबकि फैसला उसका था और वह इसके साथ जो चाहता कर सकता था? बेशक उसे अपने मज़दूरों को जितना उसका मन चाहता उतना मुआवजा देने का अधिकार था। चाहे वे उसके लिए काम पर पहले आए हों या बाद में।

उस आदमी ने निष्कर्ष निकाला **''क्या तू मेरे भले होने का कारण बुरी दृष्टि से देखता है?''** ''बुरी दृष्टि'' के लिए यूनानी भाषा के शब्द (*ponēros*) का अनुवाद आम तौर पर ''बुरा'' किया जाता है (देखें KJV)। परन्तु ''बुरी नज़र'' होने का अर्थ ''कंजूस'', ''लालची'' और ''ईर्ष्यालू'' होना है (6:23 पर टिप्पणियां देखें)। ''भले'' के लिए शब्द (*agathos*) का अनुवाद आम तौर पर ''भला'' हुआ है (देखें KJV) यह पिछले अध्याय में मिलता है, जहां यीशु ने कहा कि ''भला तो एक ही है'' यानी केवल परमेश्वर (19:17)। दिक्कत यह है कि पहले काम पर आने वाले मज़दूर उन मज़दूरों से की गई भलाई के कारण उनसे ईर्ष्या कर रहे थे जिन्होंने उन से कम घण्टे काम किया था। ईर्ष्या का कोई कारण नहीं है यह स्वार्थ के कारण हो जाती है।

आयत 16. यीशु ने इस दृष्टांत को यह कहते हुए समाप्त किया, **''इसी रीति से जो पिछले हैं, वे पहिले होंगे।''** यह बात 19:30 से मेल खाती है; ये कहावतें दृष्टांत के पुस्तकाश्रय का काम करती हैं। उलट क्रमी बनाते हुए इसका क्रम इस प्रकार है:

A1: ''परन्तु बहुत से जो पहले हैं, पिछले होंगे;
  B1: और जो पिछले हैं, पहिले होंगे'' (19:30)।
  B2: ''और जो पहिले हैं, वे पिछले होंगे
A2: और जो पहिले हैं, वे पिछले होंगे'' (20:16)।

दृष्टांत के अर्थ की चिन्ता पतरस द्वारा पूछे के प्रश्न में थी (19:27)। यीशु उसे और उसकी ही सोच वाले दूसरे लोगों से राज्य में सेवा करने के लिए मिलने वाले प्रतिफल की चिन्ता न करने को कह रहा था। इसके विपरीत उसे जो कुछ भी मिला था उसके लिए आभारी होना आवश्यक था। यीशु के चेलों को राज्य में बाद में आने वालों पर कुड़ना नहीं बल्कि प्रसन्न होना चाहिए था कि वे इसमें आ सके हैं। प्रतिफल की बात उन्हें उस पर छोड़ देनी चाहिए थी जिसकी यह जिम्मेदारी है।[12] मसीह न्याय करने वाला होगा; वह विश्वासियों को प्रतिफल देगा और अविश्वासियों को दण्ड की घोषणा करेगा। जब कोई राज्य में प्रवेश करता है तो उसका प्रतिफल काम के लिए वेतन नहीं होता बल्कि यह अनुग्रह के दान के रूप में उसे मिलता है। प्रभु का राज्य ''अनुग्रह का क्षेत्र'' है। सभी नागरिकों को एक जैसा मिलता है। किसी को भी दूसरों से ऊंचे स्तर पर नहीं रखा जाता। यीशु ने चाहे राज्य में प्रवेश करने और भागीदारी करने के सामान्य

प्रतिफल के सम्बन्ध में राज्य में विशेष प्रतिफलों का संकेत दिया हो सकता है, (5:19; 10:41, 42; 19:28), परन्तु सभी नागरिक एक समान हैं।[13]

अपनी निकट मृत्यु की यीशु की तीसरी घोषणा (20:17-19)

[17]यीशु यरूशलेम को जाते हुए बारह चेलों को एकान्त में ले गया, और मार्ग में उनसे कहने लगा। [18]"देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं; और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उस को घात के योग्य ठहराएंगे। [19]और उस को अन्यजातियों के हाथ सौपेंगे कि वे उसे ठट्ठों में उड़ाएं, और कोड़े मारें, और क्रूस पर चढ़ाएं, और वह तीसरे दिन जिलाया जाएगा।"

दीनता और ऊंचा किए जाने के विषय (20:16) यीशु के जीवन में दिखाए जाते हैं। अपनी घृणित मृत्यु में उसने "अन्तिम" होना था फिर भी जी उठने में "पहला" होना था। तीसरी बार यहां पर यीशु ने उन बारहों को अपनी आने वाली मृत्यु के बारे में बताया (16:21; 17:22, 23; 20:18, 19)।[14] उसने अपने क्रूसारोहण के लिए उन्हें तैयार करते हुए इन भविष्यवाणियों को दोहराया। इसी प्रकार से मत्ती ने उन्हें अपने पाठकों का ध्यान यीशु के अन्तिम लक्ष्य पर लगाए रखने के लिए उन्हें दर्ज किया। बेशक चेलों ने राज्य के लिए बलिदान किए थे (19:27–29) परन्तु यीशु ने प्रायश्चित के अपनी मृत्यु में अन्तिम बलिदान देना था।

आयत 17. यीशु और उसके चेले अभी भी पिरिया में ही होंगे (19:1) या शायद वे यरीहो को जाते हुए यरदन नदी पार कर चुके होंगे (20:29)। मरकुस 10:32 कहता है कि "यीशु उन के आगे-आगे जा रहा था" और उसके पीछे-पीछे चलने वाले "अचम्भा करने" और "डरने लगे" थे। उनके लिए **यरूशलेम को** जाने का समय निकट आ रहा था, जिस कारण प्रभु **बारह चेलों को एकांत में** ले गया और उन्हें अकेले में बताने लगा कि पवित्र नगर में उसके साथ क्या -क्या होने वाला है।

आयतें 18, 19. दृढ़ इरादे से यीशु ने उन्हें बताया, **"देखो हम यरूशलेम को जाते हैं।"** गलील से निकलने से पहले प्रभु ने "यरूशलेम जाने के लिए रुख करने का इरादा किया" (लूका 9:51; NKJV); उसके बाद उसने उस लक्ष्य से रोकने की किसी को अनुमति नहीं दी।

यीशु द्वारा यहूदियों और रोमियों के हाथों सही जाने वाली बातों के सम्बन्ध में सुसमाचार के विवरणों में यह सबसे विस्तृत दृश्य है। हम उस मृत्यु की ओर बढ़ने को देखते हैं जिसका ध्यान यीशु ने किया था। पहले उसने कहा कि वह **"प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा।"** यह बात तब पूरी हुई जब यहूदा ने उसे गतसमनी बाग में पकड़वाया और पहरेदारों को उसके पास लेकर आया (26:47)। दूसरा उसे महासभा के सामने लाया गया जिसमें प्रधान याजक और शास्त्री होते थे (26:57)। इस सभा ने **उसको घात के योग्य** ठहराने का निर्णय लिया (27:1), परन्तु उनके पास वह दण्ड देने का अधिकार नहीं था (1:19; 10:18; 12:14 पर टिप्पणियां देखें)। जिस कारण उन्होंने यीशु को **अन्यजातियों के हाथ** सौंप दिया, जिनके पास मृत्यु दण्ड देने का अधिकार था। "अन्यजातियां" मुख्यतया पिलातुस हाकिम को कहा गया है (27:2)। उसने यीशु को सिपाहियों को सौंप दिया ताकि वे **"उसे ठट्ठों में उड़ाएं**

और कोड़े मारें'' (27:27–30; मरकुस 15:15)। इस अपमान और पीड़ा को सहने के बाद यीशु को गुलगुता में ले जाया गया ताकि वे उसे **क्रूस पर चढ़ाएं** (27:31)।

जिस ढंग से यीशु ने मरना था उसे मत्ती की भविष्यवाणियों में पहले बताया नहीं गया था (16:21; 17:22, 23)। अब तक उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने के विचार का संकेत इस शर्त में था कि एक चेले के लिए अपना क्रूस उठाकर उसके पीछे चलना आवश्यक होगा (10:38; 16:24)। परन्तु यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने का विचार यहां स्पष्ट कर दिया गया। दिलचस्प बात है कि सुसमाचार के सहदर्शी विवरणों में केवल मत्ती ही यीशु के दुख उठाने की किसी भविष्यवाणी को बताने के लिए ''क्रूस पर चढ़ाएं'' (*stauroō*) शब्द का इस्तेमाल करता है; मरकुस और लूका ने इसके स्थान पर ''घात'' (*apokteinō*) शब्द का इस्तेमाल किया है (मरकुस 10:34; लूका 18:33)।

क्रूस पर चढ़ाना मृत्यु दण्ड देने का यहूदी तरीका नहीं था। यहूदी लोग पथराव करने, जलाने, सिर काटने या गला घोटने का इस्तेमाल करते थे।[15] अन्यजाति जो मुख्यतया उस समय में रोमी लोग थे विदेशियों, गुलामों और सबसे घटिया किस्म के अपराधियों को मृत्युदण्ड देने के लिए क्रूस पर चढ़ाते थे।[16]

अन्त में यीशु ने भविष्यवाणी की कि **तीसरे दिन** वह **जिलाया जाएगा**। क्रूस पर उसकी मृत्यु के बाद उसे यूसुफ नाम के आदमी की नई कब्र में दफ़ना दिया गया (27:59, 60)। कब्र उसे बन्द न रख सकी और तीसरे दिन की सुबह वह जी उठा (28:1, 7)। मत्ती में दुख सहने की तीनों भविष्यवाणियां यीशु के जी उठने की विजयी बात पर खत्म हो गईं (16:21; 17:23; 20:19)।

राज्य में बड़ा होना (20:20-28)

[20]तब जब्दी के पुत्रों की माता ने, अपने पुत्रों के साथ यीशु के पास आकर प्रणाम किया, और उससे कुछ मांगने लगी। [21]उसने उससे कहा, ''तू क्या चाहती है?'' वह उस से बोली, ''यह वचन दे कि मेरे ये दो पुत्र तेरे राज्य में एक तेरे दाहिने और एक तेरे बाएं बैठें।'' [22]यीशु ने उत्तर दिया, ''तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो? जो कटोरा में पीने पर हूं, क्या तुम पी सकते हो?'' उन्होंने उस से कहा, ''पी सकते हैं।'' [23]उस ने उन से कहा, ''तुम मेरा कटोरा तो पीओगे, पर अपने दाहिने बाएं किसी को बिठाना मेरा काम नहीं, पर जिन के लिए मेरे पिता की ओर से तैयार किया गया, उन्हीं के लिए है।''

[24] यह सुनकर, दसों चेले उन दोनों भाइयों पर क्रुद्ध हुए। [25]यीशु ने उन्हें पास बुलाकर कहा, ''तुम जानते हो कि अन्यजातियों के हाकिम उन पर प्रभुता करते हैं; और जो बड़े हैं, वे उन पर अधिकार जताते हैं। [26]परन्तु तुम में ऐसा न होगा; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने। [27]और जो तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने। [28]जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे; और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे।''

यीशु के दुख उठाने की भविष्यवाणियों के बाद उसके चेलों के उसके संदेश स्वीकार करने

या समझने में नाकामी की बात आती है। पहली भविष्यवाणी के बाद पतरस यीशु को एक ओर ले जाकर डांटने लगा था (16:22, 23)। दूसरी भविष्यवाणी के बाद किसी समय इस बात पर चर्चा होने लगी कि राज्य में बड़ा कौन है (18:1-4)। इस तीसरे अवसर पर राज्य में अधिकार के पदों के लिए विनती की गई (20:20-28)।

आयत 20. जब्दी के पुत्रों की माता यीशु के पास आकर उससे कुछ **मांगने लगी**। यह स्त्री यीशु के पीछे चलने वाले उन लोगों में से थी जिन्होंने उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने, दफ़नाए जाने और खाली कब्र को देखा था। उसका नाम सलोमी था (27:56 और मरकुस 15:40 की तुलना करें)। वह यीशु की माता मरियम की बहन हो सकती है (27:56; मरकुस 15:40; यूहन्ना 19:25)। यदि ऐसा है तो वह यीशु की मौसी थी और **उसके पुत्र** याकूब और यूहन्ना यीशु के मौसेरे भाई थे। यदि उनमें ऐसा रिश्ता था तो उसे लगा हो कि इस आधार पर यह विनती करना तर्कसंगत है।[17] इसके अलावा याकूब और यूहन्ना यीशु के चेलों में सबसे निकटतम चेलों में से थे (17:1 पर टिप्पणियां देखें)। पतरस और अन्द्रियास के साथ ये लोग यीशु द्वारा के साथ चुने गए आरंभिक चेले थे (4:18-22)।

मरकुस रचित सुसमाचार में जब्दी की पत्नी का नाम नहीं है; वहां यीशु के पास केवल याकूब और यूहन्ना को विनती करते दिखाया गया है (मरकुस 10:35-37)। मत्ती में तीनों यीशु के पास आए, परन्तु विनती उनकी माता ही ने की। कहानी में आगे यह स्पष्ट हो जाता है कि सलोमी की विनती में वास्तव में उसके पुत्रों की इच्छा थी (20:22, 24)। यीशु के समय में किसी अधिकारी से सीधे अपने बेटों की तरक्की की मांग करना किसी मां के लिए नई बात नहीं थी। पुराने नियम में बतशेबा ने विनती की थी कि बूढ़ा हो रहा राजा दाऊद उसके पुत्र सुलैमान को अपनी गद्दी का वारिस बना दे (1 राजाओं 1:15-21)।[18]

आयत 21. पतरस द्वारा पूछे गए पहले प्रश्न के उत्तर में यीशु ने प्रेरितों को बताया था कि वे "सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल को बारह गोत्रों का न्याय" करेंगे (19:28)। इसी प्रतिज्ञा के कारण सलोमी ने विनती की होगी कि उसके **दो पुत्र राज्य में** प्रभु के **दाहिने** और **बायें** बैठें। ये दोनों स्थान बहुत सम्मान के हैं क्योंकि यह प्रबन्ध में मुख्य गद्दियां थीं। दायां पहला था और बायां दूसरा। जोसेफस ने कहा है कि राजा शाऊल की मेज पर ये दोनों स्थानों में एक पर उसका पुत्र योनातान (दायें) और दूसरी पर उसका सेनापति अब्नेर (बायें) होता था।[19]

याकूब और यूहन्ना और उनकी माता सलोमी को राज्य के वास्तविक स्वभाव की बिल्कुल नासमझी थी। दूसरे चेलों में भी यही सोच थी, यहां तक कि यीशु के ऊपर उठाए जाने तक भी (प्रेरितों 1:6)। वे एक शारीरिक अर्थात संसार के राज्य की उम्मीद कर रहे थे; परन्तु मसीह का राज्य "इस जगत का नहीं" बल्कि आत्मिक है (यूहन्ना 18:36)।

आयत 22. यीशु ने जब उत्तर दिया तो उसने अपना उत्तर सलोमी को सम्बोधित करते हुए नहीं दिया। इसके विपरीत उसने सीधे याकूब और यूहन्ना से बात की, "**तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो। जो कटोरा मै पीने पर हूं, क्या तुम पी सकते हो?**" वह यरूशलेम में होने वाली अपनी मृत्यु की बात कर रहा था। प्राचीन समयों में अपराधियों को आम तौर पर ज़बर्दस्ती ज़हर पिलाकर मृत्यु दण्ड दे दिया जाता था। प्रतिष्ठित लोगों को इसी तरह से मारा डाला जाता था या वे आत्महत्या करना चुनते थे। "कटोरा" दुख सहने और मृत्यु का प्रतीक बन गया था। यीशु

इस पदनाम का इस्तेमाल इसी अर्थ में कर रहा था।[20]

बाद के कुछ यूनानी हस्तलेखों में अतिरिक्त वाक्यांश "या उस बपतिस्मे से बपतिस्मा लेना जिससे मैंने बपतिस्मा लेता हूं" शामिल है। स्पष्टतया ये शब्द शास्त्रियों द्वारा मरकुस मरकुस 10:38 में समानान्तर विवरण से लिए गए थे।[21]

दोनों भाइयों ने यीशु को यह कहते हुए उत्तर दिया, "**पी सकते हैं।**" इन शब्दों से मसीह के प्रति उनके समर्पण के साथ-साथ उनके आत्मविश्वास का भी संकेत मिलता है (देखें 26:33, 35)। परन्तु वे वास्तव में उसकी बात का अर्थ नहीं समझे थे।

आयत 23. फिर यीशु ने याकूब और यूहन्ना को बताया कि तुम वही **कटोरे तो पीओगे** जो उसने पीना था परन्तु राज्य में प्रमुख स्थानों पर **बिठाना** उसका काम नहीं था। वह निर्णय लेने का काम स्वर्ग में **पिता** के लिए रखा गया था।

जब समय आया तो प्रेरितों ने दुख का वह कटोरा पिया, जिसकी यीशु ने भविष्यवाणी की थी। याकूब विश्वास के लिए शहीद होने वाला पहला प्रेरित था (प्रेरितों 12:1, 2)। चाहे यह माना जाता है कि यूहन्ना अपनी मौत मरा पर अपने जीवन काल के दौरान उसने दुख बहुत सहा। कलीसिया के आरम्भिक दिनों में उसे बन्दीगृहों में डाला गया और कोड़े मारे गए (प्रेरितों 4:3; 5:17, 18, 40)। पहली सदी के अन्त के निकट उसे पतमुस के टापू पर निर्वासित कर दिया गया। रोमी कैदियों और विरोधियों को आम तौर पर एजियन समुद्र के ऐसे छोटे-छोटे टापुओं पर निर्वासित कर दिया जाता था।[22] पतमुस पर रहने के समय यूहन्ना को प्रकाशन मिला (प्रकाशितवाक्य 1:9)। परम्परा के अनुसार वह सम्राट डोमिशियन के मरने तक उस टापू पर रहा, जिसके बाद वह देश में लौट गया और शेष जीवन उसने इफिसुस में बिताया।[23]

आयत 24. अन्य **दसों** चेलों ने जब याकूब और यूहन्ना की ओर से यीशु के पास सलोमी की विनती की बात सुनी तो वे **उन दोनों भाइयों पर क्रुद्ध हुए**। यह भावनात्मक प्रतिक्रिया सच्चाई से क्रोध नहीं था, बल्कि यह उनकी अपनी स्वार्थी अभिलाषा और नाराजगी थी। शायद उन्हें क्रोध इस कारण आया कि उन्होंने पहले क्यों नहीं मांगा। कैसरिया फिलिप्पी से कफ़रनहूम को जाते हुए उन्होंने इस पर बहस की थी कि स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन होगा (18:1); परन्तु जब यीशु ने पूछा कि वे क्या चर्चा कर रहे हैं, तो वे इतने शर्मिंदा हुए कि उसे उत्तर नहीं दे पाए थे (मरकुस 9:33, 34)। अन्तिम भोज के समय भी वे बहस कर रहे थे कि "बड़ा" कौन है (लूका 22:24)। आपस में उनके झगड़े के कारण यीशु को उनके पांव धोने पड़े (यूहन्ना 13:1-20)।

आयत 25. प्रेरितों के क्रोध के उत्तर में, सुलह करवाने वाले के रूप में काम करते हुए **यीशु** ने हस्तक्षेप किया। एक बार फिर से उसने **अन्यजातियों** का इस्तेमाल नकारात्मक उदाहरण के रूप में किया (देखें 5:47; 6:7, 32; 18:17)। उसने प्रेरितों को बताया कि उसका राज्य अन्यजातियों के राज्यों की तरह नहीं होना था। उनके **हाकिम** और **जो बड़े हैं** सम्राटों, राजाओं, हाकिमों और अन्य अधिकारियों सहित उन्हें सांसारिक प्रजा पर जो उनके अधीन होती है अपनी शक्ति का **अधिकार** जताने वाले माना जाता है। यीशु का राज्य ऐसा नहीं होना था।

अन्यजातियों के सभी हाकिम दमनकारी नहीं थे। वास्तव में प्रवास में रह रहे यहूदियों के मन में उन लोगों के प्रति बड़ा सम्मान था जो उनके साथ अच्छा व्यवहार करते थे।[24] परन्तु फलस्तीन के यहूदियों का आम तौर पर शोषण किया जाता था। यीशु की भाषा से प्रेरितों के मनों

में इस्राएल पर रोमी कब्जे की बात आ गई होगी जिसे अधिक कर लगाने, सीमित स्वतन्त्रता देने और नृशंस सैनिक टुकड़ियों से पहचाना जाता था।[25] लोगों के मनों में जिनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता था और उन्हें पीटा जाता था, सैनिक शक्ति ही अपनी आत्म-सुरक्षा और देश में सही स्थान फिर से पाने का एकमात्र ढंग दिखाई देता था।[26] यह बात चाहे अति सामान्य बनाना हो सकती है पर पद और शक्ति की चेलों की इच्छाओं को बिल्कुल सही बताती है।

आयतें 26, 27. अन्यजाति हाकिमों का नकारात्मक उदाहरण देने के बाद यीशु ने राज्य में बड़ा होने के सम्बन्ध में सकारात्मक सच्चाई बताई। उसकी शिक्षा समानार्थी समानांतर रूप में दी गई जिसमें हम पहली पंक्ति के विचार को वैसे ही शब्दों में दूसरी पंक्ति में दोहराए जाते देखते हैं:

''परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे,
वह तुम्हारा सेवक बने।

और जो तुम में प्रधान होना चाहे,
वह तुम्हारा दास बने।''

पहली पंक्ति में ''बड़ा'' शब्द दूसरी पंक्ति में ''प्रधान'' का समानांतर है। इसी प्रकार ''सेवक'' शब्द ''दास'' से मेल खाता है। इस आयत में चाहे पयार्यवाची शब्दों का इस्तेमाल बेढंगे रूप में किया गया है, परन्तु सेवा में शामिल यूनानी भाषा के शब्दों के अलग-अलग अर्थ हैं। ''सेवक'' (*diakonos*) को उसके स्वामी के घर में काम करने के लिए लगाया जाता था, जबकि ''दास'' (*doulos*) से जबर्दस्ती काम करवाया जाता था।[27]

मसीह के राज्य में बड़ा होने की बात शक्ति के पद से नहीं आती; यह तो दूसरों की सेवा करने के लिए आपने आपको छोटा करने से आती है (देखें 10:39; 16:24, 25)। यीशु के चेलों के लिए इस नियम को समझना और अपनाना कठिन था जो कि मानवीय स्वभाव के विपरीत जाता हुआ लगता है। परन्तु समय बीत जाने पर उन्होंने सेवा के विचार को अपना लिया। नये नियम की कई पुस्तकों का आरम्भ लेखक द्वारा अपने आपको दास बताने से होता है (रोमियों 1:1; फिलिप्पियों 1:1; याकूब 1:1; 2 पतरस 1:1; यहूदा 1; प्रकाशितवाक्य 1:1)।

आयत 28. अपने चेलों के लिए अनुसरण करने के लिए यीशु अपने ही जीवन का नमूना दे रहा था: **''मनुष्य का पुत्र, वह इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे।''** वह संसार में देने के लिए आया न कि लेने के लिए। वह अनपढ़ों को पढ़ाने, भूखों को खिलाने, बीमारों को चंगा करने, दुष्टात्माओं से जकड़े लोगों को छुड़ाने और मुर्दों को जिलाने के द्वारा सेवक बनने का सबसे बड़ा नमूना बन गया। अन्त में उसने पाप से भरी मनुष्यजाति को परमेश्वर से मिलाने के लिए क्रूस पर अपना प्राण दे दिया। बेशक यीशु प्रभु है, पर राज करने का उसका ढंग अन्यजातियों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले नेतृत्व के ढंग से बिल्कुल उलट है (20:25; लूका 22:24-27)।

''बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे'' वाक्यांश दुखी सेवक की यशायाह की भविष्यवाणी पर आधारित लगता है: ''... उसने अपना प्राण [*psuchē*] मृत्यु के लिए उण्डेल

दिया, ... तौभी उसने बहुतों [*pollōn*] का बोझ उठा लिया और अपराधियों के लिए विनती करता है'' (यशायाह 53:12; LXX)। मत्ती के वाक्यांश का अनुवाद ''अपना जीवन बहुतों [*anti*] के स्थान पर छड़ौती के लिए देने'' हो सकता है। यह भाषा मसीह के बलिदान की वैकल्पिक प्रकृति पर नये नियम की शिक्षा में योगदान है (देखें यूहन्ना 10:11; रोमियों 4:25; 5:6–11; 2 कुरिन्थियों 5:21; गलातियों 3:13, 14; तीतुस 2:14; 1 पतरस 1:18, 19; 2:24; 3:18)।

अनुवादित शब्द ''छुड़ौती'' (*lutron*) नये नियम में केवल यहां और मरकुस 10:45 के समानांतर पद में मिलता है। यूनानी साहित्य में इसका इस्तेमाल गुलामों को छुड़ाने या युद्धबंदियों को वापस खरीदने की कीमत बताने के लिए किया जाता था। इसी प्रकार से यीशु लोगों को पाप की दासता से छुड़ाने के लिए मर गया (रोमियों 6:15–23)। इससे सम्बन्धित किया शब्द (*lutroō*) 1 पतरस 1:18 में मिलता है जो इस बात की घोषणा करता है कि छुटकारे का काम मसीह का बहुमूल्य लहू था। क्रिया शब्द तीमुस 2:14 में भी मिलता है जो कहता है कि मसीह ने हमें पाप से छुड़ाने के लिए अपने आपको दे दिया। (अन्य सम्बन्धित शब्दों के लिए; देखें रोमियों 3:24; इफिसियों 1:7; 1 तीमुथियुस 2:6; इब्रानियों 9:12.)

''छुड़ौती'' का विचार एक सवाल खड़ा कर देता है कि ''यह छुड़ौती किसे दी गई?'' क्या शैतान को दी गई? क्या परमेश्वर को दी गई? इसका सही उत्तर परमेश्वर ही होगा। एफ. गुशल ने ज़ोरदार ढंग से इस विचार का तर्क दिया है:

> ... छुड़ौती को पाने वाला तो परमेश्वर ही है। यीशु मर कर परमेश्वर की ही सेवा करता है और परमेश्वर बड़ी कठोरता से अपने पुत्र से दुख सहने की मांग करता है। परमेश्वर उसे मारता है। सारी सम्भावना से शैतान को छुड़ौती मिल सकती है नकार दी जाती है। मरकुस और मत्ती की दुख सहने की कहानी में शैतान कहीं भी नहीं है। शैतान यीशु की मृत्यु को इतना कम चाहता है कि वह उसे अपने मार्ग से हटाने की कोशिश करता है, मरकुस 8:33; मत्ती 16:23. यह बात किसी भी प्रकार से यीशु की परमेश्वर की जबर्दस्त अवधारणा से मेल नहीं खाती है कि बहुतों को शैतान की दासता से बचाया जाना चाहिए। यह अवधारणा इस बात की मांग करती है कि उन्हें कर्ज से परमेश्वर तक छुड़ाया गया।[28]

यीशु के वाक्यांश में ''बहुतों'' शब्द से यह नहीं लगना चाहिए कि यीशु कुछ ही लोगों के लिए मरा (''सीमित प्रायश्चित'')। यहां पर इसका इस्तेमाल ''सब'' के अर्थ वाली एक इब्रानी अभिव्यक्ति के रूप में हुआ है (देखें 26:28; इब्रानियों 9:28)।[29] नये नियम की अन्य आयतें दृढ़ता से यीशु के बलिदान के हर किसी के लिए होने को बताती हैं (यूहन्ना 1:29; 3:16; 2 कुरिन्थियों 5:14, 15; 1 तीमुथियुस 2:3–6; तीतुस 2:11; 1 यूहन्ना 2:1, 2)। विशेषकर 1 तीमुथियुस 2:6 दावा करता है कि यीशु ने ''अपने आपको सबके छुटकारे के दाम [*anti-lutron*] में दे दिया।'' यीशु सब लोगों के लिए मरा, बेशक उसके बलिदान के लाभों को हर कोई स्वीकार नहीं करेगा।

अन्त में आयत 28 मसीह की मृत्यु की तीन महत्वपूर्ण सच्चाइयां। (1) यह एक स्वैच्छिक कार्य था जिसमें मसीह ने अपने आपको स्वेच्छा से दिया। (2) यह उन लोगों की ओर से जिन्हें

परमेश्वर की बात माननी चाहिए थी पर मानी नहीं एक प्रतिनिधिक कार्य था। (3) यह सारे संसार के लिए किया गया एक विश्वव्यापी कार्य था।[30]

दो अंधों को आंखें देना (20:29-34)

[29]जब वे यरीहो से निकल रहे थे, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। [30]और देखो, अन्धे जो सड़क के किनारे बैठे थे, यह सुनकर कि यीशु जा रहा है, पुकारकर कहने लगे, ''हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।'' [31]लोगों ने उन्हें डांटा, कि चुप रहें; पर वे और भी चिल्लाकर बोले, ''हे प्रभु, दाऊद के सन्तान, हम पर दया कर।'' [32]तब यीशु ने खड़े होकर, उन्हें बुलाया, और कहा, ''तुम क्या चाहते हो कि मैं तु हारे लिए करूं?'' [33]उन्होंने उस से कहा, ''हे प्रभु, यह कि हमारी आंखें खुल जाएं।'' [34]यीशु ने तरस खाकर उन की आंखें छूईं, और वे तुरन्त देखने लगे; और उसके पीछे हो लिए।

सेवा पर सिखाने के बाद (20:25-28), यीशु ने दो अंधों को चंगा करके इस नियम को वैसा ही दिखाया। उसका फोकस चाहे यरूशलेम में उसके आगे आने वाले मिशन पर था, परन्तु प्रभु ने रुककर ज़रूरतमंदों के लिए अपनी करुणा दिखाने के लिए समय निकाला।

आयत 29. दो अंधों को चंगाई देना यीशु और उसके चेलों के यरीहो से जाने के समय हुआ। इससे पहले के हवालों में बताया गया है कि यीशु पिरिया में ''यरदन के पार'' (19:1) था और यरूशलेम को जा रहा था (20:17)। अब तक वह यरदन नदी पार करके पिरिया से यहूदिया में जा चुका था। वह यरीहो में आया जो यरदन से लगभग 5 मील पश्चिम में था। प्रभु यरूशलेम को जाने वाले घुमावदार कठिन मार्ग पर चढ़ने की तैयारी कर रहा था; यह तीखा मोड़ लगभग 2,600 फुट ऊंची चोटी तक जाता था। यरूशलेम यरीहो से पन्द्रह मील के लगभग दक्षिण-पश्चिम में था। माइकल जे. विलकिंस ने अनुमान लगाया है कि इस सफ़र में पैदल छह से आठ घण्टे लगते होंगे, सो यीशु और उसके चेलों को रात होने से पहले अपनी मंजिल पर पहुंच जाने की जल्दी होगी।[31]

यरीहो से यरूशलेम को जाने वाले मार्ग में अकेले जाना इस पर आम तौर पर होने वाली लूट पाट के कारण खतरनाक था (देखें लूका 10:30)। डाकू लोग आम तौर पर निहत्थे मुसाफिरों को हैरान करने के लिए गुफ़ाओं में या चट्टानों के पीछे छिप जाते थे। बड़े-बड़े दलों में सफर करने वालों को इतना डर नहीं होता था।

सुसमाचार के सहदर्शी विवरणों में चाहे इस घटना की तुलना की गई है, परन्तु इस चंगाई के समय में यीशु और उसके चेलों की स्थिति पर सवाल खड़ा होता है। मत्ती कहता है कि ''वे यरीहो से निकल रहे थे'' जब उन्हें अंधे मिले, जबकि लूका कहता है कि यीशु ''यरीहो के निकट पहुंचा'' था (लूका 18:35)। यह स्पष्ट अन्तर दो यरीहो को ध्यान में रखकर सुलझाया जा सकता है।

पुराने नियम वाला नगर यहोशू के समय में नष्ट कर दिया गया था (यहोशू 6) परन्तु बाद में इसे फिर से बना दिया गया था (1 राजाओं 16:34)। मसीह के समय में भी इसमें लोगों की आबादी थी।

पुराने और नये नियम के काल के दौरान हसमोनियों द्वारा महल के आस-पास एक नया नगर बसाया गया था। यह पुराने नगर से लगभग एक मील दूर था। बाद में हेरोदेस महान ने तीन सात सात जुड़े महलों को मिलाने के लिए हसमोनियों के महल को विस्तार दे दिया। उसे कम उंचाई के कारण गर्म वातावरण मिलने के कारण सर्दियों में यहां समय बिताना अच्छा लगता था।[32] इन महलों में स्वागत हाल, रोमियों का सनान घर, जल मगन बगीचे, तैरते तालाब और बड़े-बड़े दरबार थे। हेरोदेस ने एक रंगमंच, घोड़ों और रथों के लिए दौड़ने के मौदान और व्यायामशाला भी बनाई। खजूर के पेड़ों और गुलाब के बगीचों से नया नगर पहले ही एक मनोहर स्थान बन गया था। मार्क एंटनी ने इसे मिस्र की रानी कलियोपेट्रा को उसके लिए अपने प्रेम के प्रतीक के रूप में दिया था।[33]

स्पष्टतया यीशु पुराने यरीहो से निकलकर नये यरीहो में प्रवेश कर रहा था जब उसे दो अंधे मिले। चलते-चलते प्रभु के साथ लोगों की एक बड़ी भीड़ थी। फसह का समय निकट था इस कारण कई यात्री यरूशलेम की ओर जा रहे थे। दोनों अंधों के लिए भीख मांगने के लिए नये यरीहो में जाने वाले प्रमुख मार्ग पर कोई स्थान बहुत सही होना था (देखें लूका 18:35)। अधिकतर यात्री पर्व के लिए जाते हुए जश्न भरे माहौल में रहते होंगे और वे यात्रा में खर्च करने के लिए ढेर सारा पैसा भी लाते होंगे।

आयत 30. मत्ती का विवरण कहता है कि दो अंधे सड़क के किनारे बैठे थे। लूका 18:35 में केवल एक आदमी का उल्लेख है, जबकि मरकुस 10:46 में अंधे का नाम ''तिमाई का पुत्र बरतिमाई'' बताया गया है। कुछ लोग इस अन्तर को पवित्र शास्त्र में विरोधाभास के रूप में देखते हैं। परन्तु वास्तव में यहां कोई विरोधाभास नहीं है, क्योंकि न तो मरकुस और न लूका यीशु द्वारा केवल एक अंधे को आंखें दिए जाने का दावा करते हैं। इन विवरणों में केवल एक आदमी पर ज़ोर दिया गया है जो इस बात की अनुमति देता है कोई एक पर ध्यान दे, जबकि दूसरा भी वहां है। बरतिमाई का नाम देना भी कोई समस्या नहीं है। हो सकता है कि इस घटना में वह दोनों अंधों से अधिक बोलने वाला हो।[34] यदि हमारे पास सभी विवरण होते तो हम सुसमाचार के तीनों सहदर्शी विवरणों के बीच अलग-अलग एकरूपता को देख सकते थे।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि ऐसे मामलों में मत्ती ने अधिक सम्पूर्ण विवरण दिया है। उसने दुष्टात्माओं से ग्रस्त दो जनों (एक के विपरीत) और गदही और उसके बच्चे (केवल बच्चे के विपरीत; 8:28; 21:2 पर टिप्पणियां देखें)। मत्ती ने यहां दूसरी बार दो अंधों की चंगाई की बात की (9:27-31)।

दोनों यह सुनने के बाद कि यीशु उधर से गुज़र रहा है, जोर-जोर से चिल्लाने लगे, ''हे प्रभु, दाऊद की संतान, हम पर दया कर!'' ''दाऊद की संतान'' मसीहा को दिया जाने वाला पद है (1:1; 9:27; 15:22 पर टिप्पणियां देखें)। अंधे को आंखें मिलना एक ऐसी घटना थी जो आने वाले मसीहा के साथ होनी थी (यशायाह 29:18; 35:5; 42:7; 11:5 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 31. अंधों की विनतियों के उत्तर में भीड़ के लोगों ने उन्हें कठोरता से चुप रहने को कहा। उन्होंने उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया जैसे प्रेरितों ने पहले उन माताओं के साथ किया था जो अपने बच्चों को यीशु के पास ला रही थीं (19:13)। लोगों ने यह नहीं सोचा कि मसीह तो आया ही उनके लिए था जो सामाजिक तौर पर महत्वहीन हैं। भीड़ के उत्तर ने अंधों को और

ढीठ बना दिया और वे और भी ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे।

आयत 32. यीशु ने भीड़ को इन निराश लोगों को सहायता करने के रास्ते में रुकावट बनने की अनुमति नहीं दी। जब उसने देखा और सुना कि क्या हो रहा है तो उसने रुककर उन अंधों को उसके पास लाने की आज्ञा दी। तब उनको पीछे हटाने वाले उनको आगे आने को कहने लगे, ''ढाढ़स बांध! उठ! वह तुझे बुलाता है'' (मरकुस 10:49)। प्रभु ने उन दोनों से पूछा, **''तुम क्या चाहते हो कि मैं तु हारे लिए करूं?''** वह उनकी आवश्यकता को पहले से जानता था परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि वह चाहता था कि वे इसे बताएं।

आयतें 33, 34. अंधों ने उसे बताया, **''हे प्रभु, यह कि हमारी आंखें खुल जाएं।''** यीशु ने उन पर तरस खाया (देखें 9:36; 14:14; 15:32; 18:27) और उनकी आंखों को स्पर्श किया; और उसी घड़ी वे देखने लगे। मरकुस के अनुसार, उसने बरतिमाई से कहा, ''चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है'' (मरकुस 10:52)। तीनों विवरणों में कहा गया है कि वे लोग (या आदमी) जिन्हें चंगा किया गया था यीशु के पीछे हो लिए (मरकुस 10:52; लूका 18:43)।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

दाख की बारी में किसानों का दृष्टांत (20:1-16)

दाख की बारी में मज़दूरों के दृष्टांत में यीशु यह समझाने के लिए कि हमें जो भी प्रतिफल मिलता है। वह परमेश्वर के अनुग्रह से होता है, प्राचीन इस्राएल के प्रतिदिन के जीवन से एक उदाहरण का इस्तेमाल कर रहा है। लोगों को जैसा उसे सही लगे प्रतिफल देना परमेश्वर का विशेषाधिकार है। गृहस्वामी परमेश्वर को दर्शाता है; और वह मज़दूरों के सभी पांचों से व्यवहार में बिल्कुल न्याय कर रहा था, क्योंकि उसने बिल्कुल वही किया जो उसने हर समूह के साथ ठहराया था। इसी प्रकार से परमेश्वर वही करता है जो करने की उसने हम से प्रतिज्ञा की है।

गृहस्वामी ने अपनी दाख की बारी में काम करने के लिए मज़दूरों को लगाया। यह दृष्टांत सब लोगों के लिए परमेश्वर के राज्य अर्थात कलीसिया में प्रवेश करने के उसके निमन्त्रण को दिखाता है; और वे सब लोग जो विश्वासयोग्य हैं उन्हें प्रतिफल दिया जाएगा। पहले ही घण्टे में आ जाने वाला मज़दूर एक घण्टा रहते काम पर आने वाले मज़दूर से स्वर्ग में अधिक आभारी होगा? किसी को लग सकता है परन्तु शायद जिसके हाथ से अवसर निकल जाने वाला हो वह परमेश्वर के अनुग्रह का और भी अधिक आभारी होगा।

गृहस्वामी ने अपनी ही दाख की बारी में काम करने के लिए मज़दूरों को लगाया न कि पड़ोसी की दाख की बारी के लिए। स्वर्ग का राज्य कलीसिया है और आज भी पाई जाती है। बहुत सी ''दाख की बारियां'' आज मज़दूरों के लिए होड़ में लगी हुई हैं, परन्तु वे एक ही दाख की बारी नहीं हैं। परमेश्वर की दाख की बारी की पहचान पवित्र शास्त्र में मिलती है। जो लोग उसकी दाख की बारी में काम करने के निमन्त्रण को स्वीकार करते हैं उन्हें उसका प्रतिफल मिलेगा। उसकी दाख की बारी को छोड़ और दाख की बारियों में काम करने वालों को प्रतिफल नहीं मिलेगा। हमें यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि हम प्रभु की दाख की बारी में ही काम कर रहे हैं।

कोई व्यक्ति परमेश्वर से सौदेबाजी नहीं कर सकता। यह मानने के लिए कि वह जो कुछ करेगा वह सही ही है हमें उसके वचन और उसके स्वभाव पर निर्भर रहना होगा (उत्पत्ति 18:25)। यीशु ने कहा, "अत: जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा" (7:11; देखें लूका 11:13)। रोमियों 5:9-20 की मुख्य बात "अधिकाई से" है। परमेश्वर हमें उससे अधिक प्रतिफल देगा, जिसके हम अधिकारी हैं। वह अधर्मी, अनुग्रहकारी और दयालु है; और वह वही करेगा जो हम सब के लिए सही है।

दाख की बारी के दृष्टांत से सीखना (20:1-16)

अध्याय 19 की अन्तिम आयत दाख की बारी के मज़दूरों के दृष्टांत का परिचय देती है। हमें इस दृष्टांत की और इसके दिए जाने के कारणों की सही व्याख्या करनी आवश्यक है।

कहानी बताई गई। गृहस्वामी ने दिन के अलग-अलग समयों में अलग-अलग समझौतों के साथ अपनी दाख की बारी के लिए मज़दूरों को लगाया। दिन के अन्त में उसने मज़दूरों के साथ हिसाब किया।

कुछ सबक देखे गए। परमेश्वर के साथ सौदेबाज़ी करने की कोशिश न करें। स्वीकृति की शर्तें केवल वही तय करता है। इसके अलावा राज्य में दूसरे मज़दूरों के साथ अपने आपको मिलाने से बचें। हम दूसरों के इरादों पर संदेह न करें या उनकी आशिषों से न जलें।

परमेश्वर न्याय करने वाला और करुणामय है।

काम के प्रति व्यवहार (20:1-16)

दृष्टांत मज़दूरों के व्यवहारों और परमेश्वर के राज्य के सेवकों के व्यवहारों में अन्तरों की ओर ध्यान दिलाता है। जो लोग केवल पैसे के लिए काम करते हैं। वह उन्हें अपने मज़दूरी का बहुत कम आनन्द या संतुष्टि मिलती है। उनके काम के फल या गुण पर संदेह करना कठिन है।

घड़ी को देखते रहने वालों को केवल अपना समय पूरा करने का ध्यान होता है और वे जो उनसे अपेक्षा की जाती या मांगा जाता है। उसे करने को तैयार नहीं होते। लोगों को देखने वाले लोग भी हैं। वे देखते हैं कि दूसरे लोग क्या करते हैं और अपने आपको उनके बेहतरीन काम से मिलाने के बजाय अपने सहकर्मियों के साथ मिलाते हैं। यदि उन्हें लगता है कि दूसरे लोगों के साथ बेहतर व्यवहार किया जा रहा है, उन्हें अधिक परिश्रम दिया जा रहा है या पदवी या बेहतर काम दिया जा रहा है तो वे नाराज हो जाते हैं।

बहुत से काम करने वाले अपने काम का आनन्द लेते और उससे अधिक से अधिक संतुष्टि पाते हैं। वे अपनी प्राप्तियों या फल पर गर्व करते हैं। कई बार वे कहते हैं, "मैं यह काम अवश्य करूंगा चाहे मुझे इसका पैसा न मिले।" कुछ लोग जो उनसे कहा जाता है उससे कहीं बढ़कर करते हैं। उनके लिए काम केवल नौकरी नहीं बल्कि एक मिशन भी है। वे अपने साथी कर्मचारियों की सफलता को सराहते और उनकी प्राप्तियों में उनके साथ आनन्द करते हैं।

प्राथमिकता या सेवा? (20:20-28)

याकूब और यूहन्ना की माता यीशु के पास एक स्वार्थी विनती लेकर आई थी। सलोमी ने विनती की कि उसके पुत्रों को प्रभु के राज्य में उसके दायें और बायें बैठने दिया जाए। इस विनती के कारण यीशु ने पतरस से इस्राएल के बारह सिंहासनों पर बैठकर बारह गोत्रों का न्याय करने की बात की। इस प्रश्न ने यीशु को सिखाने का अवसर दे दिया; उसने सचमुच में बड़ा होने और सेवक बनने पर सबक दे दिया।

एक माता का अपने दो पुत्रों पर घमण्ड (20:20-23)। याकूब और यूहन्ना की गौरवान्वित माता के रूप में सलोमी कह रही थी कि उन्हें राज्य में प्राथमिकता के स्थान दिए जाएं। उसके प्रश्न को मसीह के उत्तर से दिखाया गया कि उसे समझ नहीं थी कि वह क्या मांग रही है।

दस क्रुद्ध प्रचारक (20:24-28)। दस अन्य प्रेरित इतने क्रुद्ध क्यों थे? उन्हें साथी प्रेरितों का उनके ऊपर होने का विचार पसन्द नहीं आया। यीशु ने इन फूले हुए प्रचारकों की हवा निकाल दी। उसने स्वयं का नमूना देकर नियम को समझाया। वह सेवा करने के लिए आया था और अन्त में पापियों की छुड़ौती के रूप में मर गया।

ऐल्डर और प्रमुख जगहें (20:20-28)

यीशु ने याकूब और यूहन्ना की माता और दोनों प्रेरितों को यह स्पष्ट कर दिया कि उसके राज्य में कोई प्रमुख सीट नहीं है (मरकुस 10:38-40)। संसार के राज्यों में ऐसा ही होता है जिसमें एक व्यक्ति दूसरों के "ऊपर प्रबन्ध रखता है।" कलीसिया में ऐल्डर "राज करते" हैं (1 तीमुथियुस 5:17; इब्रानियों 13:7, 17), परन्तु उन्हें चाहिए कि जो लोग [उन्हें] सौंपे गए हैं "उन पर अधिकार न" जताएं (1 पतरस 5:3)। तो फिर वे किस अर्थ में अधिकार चलाते हैं? "प्रबन्ध" शब्द का अर्थ "अगुआई करना, या दिशा देना" है। विश्वास के मामलों में ऐल्डरों को कानून बनाने का अधिकार नहीं है। नियम देने वाला केवल परमेश्वर है (याकूब 4:12)। कलीसिया के अगुवे के लिए इतना ज्ञानवान होना आवश्यक है कि वह जिस मण्डली पर सेवा करता है उसे सही और गलत में अन्तर करने के योग्य हो। उपयोगिता या न्याय के मामलों में उसे निर्णय लेने के लिए पवित्र शास्त्र के नियमों का इस्तेमाल करने में योग्य होना आवश्यक है।

सेवक बनकर अगुआई करना (20:20-28)

यीशु ने अन्यजातियों की तरह अगुआई करने के ढंग की निंदा की जो दूसरों पर अपने ही स्वार्थी उद्देश्य के लिए अधिकार चलाते हैं। इसके विपरीत उसने अपने चेलों से सेवा का तरीका अपनाने को कहा। आज बहुत से लोग बड़ी सी उपाधि पाकर, बड़ी अधिक वेतन पाकर, बड़े हुए अधिकार पाकर, और अधिक पहचान के द्वारा सफलता की सीढ़ी चढ़ना चाहते हैं। उनके कैरियर उन्हीं के बारे में हैं। इसके विपरीत यीशु हमें दूसरों की सहायता पर ध्यान दिलाना चाहता है। दूसरों के जीवनों को आशीषित करके और उन्हें मसीह की ओर लाकर हम जीवन के वास्तविक अर्थ को पाते हैं। जीवन वास्तव में हम नहीं बल्कि वह अन्तर है जो इस संसार में ला सकते हैं।

डेविड स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]टालमुड *बाबा मेज़िया* 83बी। [2]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 499, एन. 5. [3]रोमी दीनार, यूनानी द्राखमा के मूल्य जितना होता था। अपोक्रिफा में एक व्यक्ति को मज़दूरी के साथ उसके खर्चों के लिए प्रतिदन द्राखमा दिया जाता है। (टोबित 5:14, 15.) [4]टेसिटुस *ऐनल्स* 17; प्लायनी *नेचुरल हिस्ट्री* 33.13. [5]*जौंडरवन इलस्ट्रेटड बाइबल बैकग्राउंड कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक,* संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 2002), 121 में माइकल जे. विलकिन्स, ''मैथ्यू।'' [6]मौरिस, 500. [7]विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री: एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 739. [8]रॉबर्ट एच. गुंडरी, *मैथ्यू: ए कमैंटरी आन हिज़ लिटरेरी एंड थियोलॉजिकल आर्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 398. [9]डेविड हिल, *द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 286. [10]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 398.

[11]क्रेग एस. कीनर, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1999), 483, एन. 72. देखें डेमोसथीन्स *ऑन द क्राउन* 51; डायोनिसियुस ऑफ़ हेलिकरनेसुस 6.81.3. [12]उड़ने वाला व्यवहार फरीसियों का भी था जो चंगी लेने वालों और पापियों के मन फिराने पर कुड़कुड़ाते थे (लूका 15:1, 2)। जिस कारण यीशु ने बड़े भाई के ईर्ष्या को दिखाने के लिए उड़ाऊ पुत्र का दृष्टांत बताया था। बाद में कलीसिया की स्थापना के बाद यहूदी मसीही लोगों को अन्यजातियों के प्रति अपने व्यवहार को बदलने में कठिनाई आ रही थी, जो मसीही बन रहे थे (प्रेरितों 15; गलातियों 2)। [13]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 14–28,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33बी (डलास: वर्ड बुक्स, 1995), 573. [14]प्रभु ने रूपांतर पर्वत पर से उतरते समय (17:9–13) अपने निकटतम चेलों (पतरस, याकूब और यूहन्ना) को भी अपने दुख सहने की बात बताई। [15]मिशनाह *सन्हेद्रिन* 7.1. [16]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 189. [17]इस सम्बन्ध से थोड़ा सा पता चलेगा कि यीशु ने अपनी माता मरियम का जिम्मा प्रेरित यूहन्ना, जो कि उसका भांझा था, को क्यों दिया था (यूहन्ना 19:26, 27)। [18]विलकिन्स, 123. [19]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 6.11.9; देखें 1 शमूएल 20:25. [20]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, *द न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू एंड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 176.

[21]ब्रूस एम. मैज़गर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट,* 2रा संस्क. (स्टटगर्ट: जर्मन बाइबल सोसायटी, 1994), 42; देखें KJV; NKJV. [22]प्लायनी, *नेचुरल हिस्ट्री* 4.12.69–70; टेसिटुस *ऐनल्स* 3.68; 4.30; 15.71. [23]इरेनियुस *अगेंस्ट हेरेसीस* 2.22.5; 3.1.1; 3.3.4; क्लेमेंट ऑफ़ एलेक्जेंडरिया *हू इज़ ए रिच मैन* 42; युसबियुस *एक्लेसिएस्टिकल हिस्ट्री* 3.13, 18, 23, 31; 4.14; 5.8, 24. [24]कीनर, 486–87. [25]यीशु ने अभी अभी भविष्यवाणी की थी कि अन्यजातियां उसे ठट्ठा करेंगी, कोड़े मारेंगे और उसे क्रूस पर चढ़ाएंगे (20:19)। वह स्वयं उनके अन्याय का शिकार था। [26]विलकिन्स, 124. [27]वही। [28]*थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट,* संपा. गरहर्ड किट्टल, अनु. व संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1967), 4:344 में एफ़. बुशल। [29]जैक पी. लुईस *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 2, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 81. [30]डब्ल्यू. एफ. अल्ब्राइट एंड सी. एस. मन्न, *मैथ्यू,* द एंकर बाइबल (गार्डन सिटी, न्यू यार्क: डबलडे एंड कं., 1971), 242.

[31]विलकिन्स, 125. [32]जोसेफस ने लिखा, ''आस पास की हवा यहां पर भी इतने अच्छे तापमान वाली है कि देश के लोग केवल मलमल पहनते हैं, चाहे शेष यहूदिया में बर्फ पड़ी हो'' (जोसेफस *वार्स* 4.8.3)। [33]वही, 1.18.5. [34]हैंड्रिक्सन, 752.